!!श्री महाकाल चालीसा!!

॥ दोहा ॥

श्री महाकाल भगवान की महिमा अपरम्पार,
पूरी करते कामना भक्तों की करतार।
विद्या-बुद्धि-तेज-बल-दूध-पूत-धन-धान,
अपने अक्षय कोष से भगवान करो प्रदान ॥

॥ चौपाई ॥

जय महाकाल काल के नाशक। जय त्रिलोकपति मोक्ष प्रदायक॥
मृत्युंजय भवबाधा हारी। शत्रुजय करो विजय हमारी ॥
आकाश में तारक लिंगम्। पाताल में हाटकेश्वरम् ॥
भूलोक में महाकालेश्वरम्। सत्यम्-शिवम् और सुन्दरम् ॥
क्षिप्रा तट ऊखर शिव भूमि। महाकाल वन पावन भूमि ॥
आशुतोष भोले भण्डारी। नटराज बाघम्बरधारी ॥
सृष्टि को प्रारम्भ कराते। कालचक्र को आप चलाते ॥
तीर्थ अवन्ती में हैं बसते । दर्शन करते संकट हरते ॥
विष पीकर शिव निर्भय करते। नीलकण्ठ महाकाल कहाते ।।
महादेव ये महाकाल हैं। निराकार का रूप धरे हैं।
ज्योतिर्मय-ईशान अधीश्वर। परम् ब्रह्म हैं महाकालेश्वर ॥
आदि सनातन-स्वयं ज्योतिश्वर। महाकाल प्रभु हैं सर्वेश्वर ॥
जय महाकाल महेश्वर जय-जय। जय हरसिद्धि महेश्वरी जय-जय॥
शिव के साथ शिवा है शक्ति। भक्तों की है रक्षा करती ॥
जय नागेश्वर-सौभाग्येश्वर। जय भोले बाबा सिद्धेश्वर ॥
ऋणमुक्तेश्वर-स्वर्ण जालेश्वर। अरुणेश्वर बाबा योगेश्वर ॥
पंच-अष्ट-द्वादश लिंगों की। महिमा सबसे न्यारी इनकी ॥
श्रीकर गोप को दर्शन दे तारी। नंद बाबा की पीढ़ियाँ सारी ॥
भक्त चंद्रसेन राजा शरण आए। विजयी करा रिपु-मित्र बनाये।।
दैत्य दूषण भस्म किए। और भक्तों से महाकाल कहाए ।
दुष्ट दैत्य अंधक जब आया। मातृकाओं से नष्ट कराया ॥
जगज्जननी हैं माँ गिरि तनया। श्री भोलेश्वर ने मान बढ़ाया ॥
श्री हरि की तर्जनी से हर-हर। क्षिप्रा भी लाए गंगाधर॥
अमृतमय पावन जल पाया। 'ऋषि' देवों ने पुण्य बढ़ाया॥
नमः शिवाय मंत्र पंचाक्षरी। इनका मंत्र बड़ा भयहारी॥
जिसके जप से मिटती सारी। चिंता-क्लेश-विपद् संसारी॥
सिर जटा-जूट-तन भस्म सजै। डम डम डमरू त्रिशूल सजै॥
शमशान विहारी भूतपति । विषधर धारी जय उमापति॥
रुद्राक्ष विभूषित शिवशंकर। त्रिपुण्ड विभूषित प्रलयंकर॥
सर्वशक्तिमान - सर्व गुणाधार। सर्वज्ञ-सर्वोपरि-जगदीश्वर॥
अनादि - अनंत - नित्य - निर्विकारी। महाकाल प्रभु-रूद्र-अवतारी॥
धाता - विधाता - अज - अविनाशी। मृत्यु रक्षक सुखराशी॥
त्रिदल- त्रिनेत्र - त्रिपुण्ड- त्रिशूलधर। त्रिकाय-त्रिलोकपति महाकालेश्वर॥
त्रिदेव-त्रयी हैं एकेश्वर। निराकार शिव योगीश्वर॥
एकादश - प्राण - अपान - व्यान। उदान-नाग-कुर्म-कृकल समान॥
देवदत्त धनंजय रहें प्रसन्न। मन हो उज्जवल जब करें ध्यान॥
अघोर-आशुतोष-जय औढरदानी। अभिषेक प्रिय श्री विश्वेश्वर ध्यानी॥
कल्याणमय-आनंद स्वरुप शशि शेखर। श्री भोले शंकर जय महाकालेश्वर ।।
प्रथम पूज्य श्री गणेश हैं, ऋद्धि-सिद्धि संग। देवों के सेनापति, महावीर स्कंध ॥
अन्नपूर्णा माँ पार्वती, जग को देती अन्न। महाकाल वन में बसे, महाकाल के संग॥

॥ दोहा ॥

शिव कहें जग राम हैं, राम कहें जग शिव,
धन्य-धन्य माँ शारदा, ऐसी ही दो प्रीत।
श्री महाकाल चालीसा, प्रेम से, नित्य करे जो पाठ,
कृपा मिले महाकाल की, सिद्ध होय सब काज ॥

और भी आरती व चालीसा देखने के लिए नीचे दिए गए लिंक पर क्लिक करें:

https://bhaktimargdarshan.com/

हम आशा करते हैं कि यह सामग्री आपके लिए उपयोगी रही होगी।
अगर आपको यह पसंद आई हो, तो इसे अपने परिवार और मित्रों के साथ जरूर साझा करें।

Bhakti Margdarshan